ISSN - 2229-3620
APPROVED UGC CARE
FFS

SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 10, Issue 40, October-December 2020
Page Nos. 136 - 139

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

हिन्दी नवजागरण का विकास और निराला का कथा साहित्य

विनय प्रकाश तिवारी*
डॉ0 देवेंद्र नाथ सिंह**

शोध सारांश

भारत में नवजागरण की कई अंतर्धारायें थी। जहाँ बंगाल में नवजागरण बुद्धिवाद से प्रभावित था और उसके केन्द्र में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार थे वहीं महाराष्ट्र में नवजागरण की मूल चेतना ब्राह्मण वाद का विरोध करने में थी जिसे आज हम दलित चेतना कहते हैं। जबकि हिन्दी प्रदेश में नवजागरण का मूल स्वर राष्ट्रवाद था जिसमें देश की स्वतन्त्रता प्रमुख विषय था। सन् 1857 की क्रान्ति हिन्दी नवजागरण का प्रस्थान बिन्दु है, यहीं से हिन्दी प्रदेशों में नवजागरण की शुरूआत होती है। हिन्दी नवजागरण के विकास का दूसरा चरण भारतेन्दु हरिश्चद्र का युग है जिसमें हिन्दी गद्य लेखन का विकास, पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं देश की सामाजिक आर्थिक चेतना को जगाने का कार्य किया गया। हिन्दी नवजागरण का तृतीय चरण महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं उनके समकालीन लेखकों का समय है जिसमें भाषा का परिष्करण गद्य और पद्य लेखन में खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग एवं समसामयिक समस्याओं के साथ–साथ देश की राष्ट्रीय चेतना को जगाने का कार्य किया गया। आगे चलकर निराला भी नवजागरण से जुड़ते हैं और अपनी क्रान्तिकारिता, प्रतिरोधात्मकता एवं ओजस्विता से इसे समृद्ध करते हैं। निराला के जीवनानुगत अनुभव उनके कथा साहित्य को प्रभावोत्पादक बनाते हैं। वह स्त्री मुक्ति वर्णाश्रम धर्म, मनुष्य–मनुष्य में भेद एवं किसानों के शोषण पर बड़ी मुखरता से लिखते हैं। वह हिन्दी नवजागरण को अपने प्रगतिशील लेखन से आगे बढ़ाने का कार्य करते हैं।

Keywords : भारतीय नवजागरण, सन् सत्तावन की क्रान्ति, निराला, हिन्दी नवजागरण, सामाजिक धार्मिक सुधार, किसान।

भारतीय नवजागरण सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जागरण के साथ अंग्रेजी सत्ता के शोषण के विरूद्ध भारतीय जनता का विद्रोह भी था। इसमें राष्ट्रीय स्वाधीनता का प्रश्न भी प्रमुख था। 1857 ई0 की क्रान्ति जिसे डॉ0 रामविलास शर्मा ने भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम कहा है, हिन्दी प्रदेश की जनता का स्वाधीनता प्राप्त करने की छटपटाहट का परिणाम थी। नवजागरण अपने विशाल फलक में दो रूपों में दिखाई देता है। 19वीं सदी का नवजागरण मूलतः सांस्कृतिक नवजागरण था, जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक सुधार पर बल दिया गया, इसकी शुरूआत बंगाल से होती है। दूसरे रूप में नवजागरण स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़ता है, जिसमें राजनीतिक मुक्ति की आकांक्षा प्रबल थी। इसकी शुरूआत सन् 1857 की क्रान्ति से होती है। 19वीं सदी का अधिकांश नवजागरण मूलतः सामाजिक एवं सांस्कृतिक नवजागरण है। इसमें सतीप्रथा, विधवा–विवाह, मनुष्य–मनुष्य में भेद, स्त्री–पुरूष असमानता, बाल–विवाह एवं पितृसत्तात्मक समाज में हो रहे स्त्रियों पर शोषण जैसी प्रमुख समस्यायें शामिल थीं। सांस्कृतिक नवजागरण का स्वरूप मूलतः ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दायरे में रहकर विकसित हो रहा था, जबकि राजनीतिक नवजागरण का मूल उद्देश्य ब्रिटिश सत्ता को जड़ समेत उखाड़ फेंकने का था। सन् 1857 की क्रान्ति एक तरीके से भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम है, इस बात की पुष्टि कई इतिहासकार एवं साहित्यकार करते हैं जिनमें डॉ0 रामविलास शर्मा उल्लेखनीय हैं। उन्होंने इस पर बहुत विस्तारपूर्वक लिखा है। सन् 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई जिसे 'सेफ्टी वाल्व' की भी संज्ञा दी गई और यहाँ तक कहा गया कि इसका उद्देश्य भारतीय जनता के आक्रोश को कम करना था, फिर भी कांग्रेस की स्थापना के पश्चात् लोगों में एक जुटता आयी और लोगों ने स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए प्रयास करना शुरू किया। 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है', 'करो या मरो' जैसे नारे इसी समय गूँजने शुरू हुए। 20वीं सदी में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में स्वाधीनता आन्दोलन अपने शिखर पर पहुँचता है और इसमें हर तबके से लोग जुड़ते हैं।

भारतीय समाज एक बहुभाशिक एवं बहुधार्मिक समाज है, जिसमें धर्म और आस्था की जड़ें बहुत गहरे तक व्याप्त हैं। ऐसे

*शोध छात्र – हिन्दी विभाग, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ
**शोध पर्यवेक्षक – पूर्व प्रोफेसर, हिंदी विभाग, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ

बहुपर्तदार समाज में धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आसान कार्य नहीं था। इसीलिए यहाँ नवजागरण के लिए कोई एक निश्चित मार्ग नहीं था। '' भारतीय नवजागरण में कई अंतर्धारायें थीं। एक ही समय जब बंगाल बुद्धिवाद से उद्दीप्त था और वहाँ धार्मिक सुधार का जोश था, हिन्दी क्षेत्र में साम्प्रदायिक भाईचारे को मजबूत बनाते हुए अंग्रेजी राज के खिलाफ 1857 का पहला स्वाधीनता संग्राम चला। ठीक इसी समय महाराष्ट्र में एक दूसरा ही नजारा था। यहाँ नवजागरण का मुख्य तत्व ब्राह्मणवाद से विद्रोह था, दलितों का जागरण ही नवजागरण था। केरल और तमिलनाडु में जहाँ कुछ देर से नवजागरण आया, ब्राह्मणवाद ही निशाने पर था। आन्ध्र प्रदेश और गुजरात में शिक्षा और धार्मिक सुधार पर बल था। इन सभी में समानता यह थी कि उनमें किसी–न–किसी दमन के खिलाफ मानवीय प्रतिवाद की आवाज थी।''[1]

हिन्दी प्रदेशों में नवजागरण का जो मूल स्वरूप विकसित हुआ वह सम्राज्यवाद का विरोध और राष्ट्रवाद की अवधारणा को लेकर आगे बढ़ा। हिन्दी प्रदेशों में सामाजिक धार्मिक सुधारों को लेकर उतनी तीव्रता नहीं दिखती जितनी बंगाल नवजागरण में दिखायी देती है, हालांकि फिर भी हिन्दी साहित्यकारों ने अपने साहित्य लेखन में इसके लिए कम प्रयत्न नहीं किया। ''हिन्दी क्षेत्र के नवजागरण में साम्राज्यवाद–विरोधी स्वर के साथ धार्मिक सामंती कूपमंडूकता का विरोध कम तात्पर्यपूर्ण न था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सामाजिक सुधार का संगठित प्रयत्न न कर सके, लेकिन उन्होंने धार्मिक मतांधता के केन्द्र काशी में अपनी साहित्यिक आवाज बुलन्द की। वे बालविवाह, भूतप्रेत और ज्योतिश की कठोर आलोचना करते हुए कहते हैं, ''जहाँ का धर्म परिष्कृत नहीं वहाँ का समाज उन्नत नहीं।'' उनके पत्र 'कविवचन सुधा' के आदर्श वाक्य का एक अंश है, 'नारी नर सम होंहि।' वे देशी रजवाड़ों और सामंतों का जमकर माखौल उड़ाते थे।''[2]

भारतेन्दु मंडल के अन्य लेखक भी तत्कालीन सामाजिक समस्याओं को अपनी रचनाओं में रेखांकित कर रहे थे। प्रतापनरायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट और बदरीनरायण चौधरी 'प्रेमघन' के साहित्य में तत्कालीन समाज की दशा को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जिसमें बालविवाह, स्त्रियों की दयनीय स्थिति और किसानों की बदतर हालत का चित्रण है। प्रतापनरायण मिश्र ने बाल्यकाल में ही वैधव्य को प्राप्त हो जाने वाली स्त्रियों के कष्ट को देखकर लिखा था, 'कौन करेजो नहि कसकत सुनि विपति बाल विधवन की'।

हिन्दी प्रदेश में नवजागरण के विकास के क्रम को स्पष्ट करते हुए डॉ0 रामविलास शर्मा ने 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' पुस्तक में लिखा है कि ''गदर, सन् 57 का स्वाधीनता–संग्राम, हिन्दी प्रदेश के नवजागरण की पहली मंजिल है। दूसरी मंजिल भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का युग है। गदर के केवल 10 साल बाद 1868 में उन्होंने 'कवि वचन सुधा' नाम की पत्रिका निकाली। पत्रिका निकालने के दो साल बाद उन्होंने इसमें 'लेवी प्राणलेवी' नाम का अपना प्रसिद्ध ब्रिटिश–विरोधी लेख लिखा। भारतेन्दु युग का साहित्य व्यापक स्तर पर गदर से प्रभावित है, इसका पहला प्रमाण यह है कि इस साहित्य में किसानों को लक्ष्य करके, उन्हें संगठित और आन्दोलित करने की दृष्टि से जितना गद्य–पद्य लिखा गया है, उतना दूसरी भारतीय भाषाओं में नहीं लिखा गया। दूसरा प्रमाण यह है कि इस साहित्य का माध्यम संस्कृत गर्भित भाषा नहीं है, जैसे कि वह बांग्ला साहित्य में है, वरन वह बोलचाल की भाषा है, और जनपदीय उपभाषाओं से अपना नाता जोड़े हुए है।''[3]हिन्दी नवजागरण के विकास क्रम में तीसरे चरण को स्पष्ट करते हुए डॉ0 रामविलास शर्मा लिखते हैं कि '' हिन्दी नवजागरण का तीसरा चरण महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके सहयोगियों का कार्यकाल है। सन् 1900 में सरस्वती का प्रकाशन आरम्भ हुआ और 1920 में द्विवेदी जी उससे अलग हुए। इन दो दशकों की अवधि को द्विवेदी युग कहा जा सकता है। इस युग की सही पहचान तभी हो सकती है जब हम एक तरफ गदर और भारतेन्दु युग से उसका सम्बन्ध पहचानें, और दूसरी तरफ छायावादी युग, विशेष रूप से निराला साहित्य से उसके सम्बन्ध पर ध्यान दें।''[4] हिन्दी गद्य के विकास में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनकी पत्रिका 'सरस्वती' का योगदान अविस्मणीय है। निराला ने भी सरस्वती की प्रतियों का अध्ययन कर हिन्दी सीखी थी। नवजागरण के सन्दर्भ में निराला को समझने के लिए उनकी विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लिखी गयी सम्पादकीय टिप्पणियाँ भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। भाषाई स्तर पर हिन्दी गद्य लेखन का विकास 19वीं–20वीं सदी की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। तमाम भाषाई विवादों के बावजूद हिन्दी उस समय जन भाषा और आन्दोलन की भाषा बन रही थी। भारतेन्दुयुगीन हिन्दी का परिमार्जन आचार्य द्विवेदी ने बड़ी लगन से किया। उनके द्वारा सम्पादित पत्रिका सरस्वती को पढ़कर बहुतों ने हिन्दी सीखी और तमाम लोग हिन्दी साहित्य लेखन में प्रवृत्त हुए।

नवजागरण के इस दौर में कई महत्वपूर्ण पत्र पत्रिकाओं का निकलना प्रारम्भ हुआ। इनमें 'विशाल भारत', 'हंस', 'सुधा', 'माधुरी', 'मतवाला' एवं 'प्रताप' प्रमुख थीं। इन पत्र पत्रिकाओं के सम्पादक प्रख्यात साहित्यकार थे एवं देशकाल समाज से गहरा जुड़ाव रखते थे। 19वीं–20वीं शताब्दी में भारतीय समाज की सबसे बड़ी दुर्दशा साम्राज्यवादी–सामंतवादी व्यवस्था के कारण थी। किसान एवं स्त्री भारतीय साम्राज्यवादी–सामंतवादी व्यवस्था में हमेशा पीड़ित एवं शोषित होते रहे हैं। भारतीय कृषकों की दुर्दशा को तत्कालीन समय में प्रेमचंद ने सर्वाधिक सशक्त स्वर में उठाया और हिन्दी साहित्य में कृषक जीवन की दयनीय स्थिति का वर्णन किया। प्रेमचंद के बाद निराला ने कृषक जीवन की समस्याओं पर सर्वाधिक लेखन कार्य किया है। ''निराला का

कथा–साहित्य उनकी जीवनगत परिस्थितियों, संस्कारों एवं विविध मनोदशाओं के अतिरिक्त तत्कालीन सामाजिक अवस्था और तद्विशयक आन्दोलनों से प्रभाव ग्रहण कर निर्मित हुआ है। उनके कथा–साहित्य का उद्देश्य सुधारवादी आन्दोलनों की भाँति सुधार करना नहीं है। 'निराला' समस्याओं और सामाजिक स्थिति को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने में अत्यन्त दक्ष थे, किन्तु उनकी प्रकृति उपदेश देने की नहीं थी। इसीलिए उनका कथा–साहित्य विचारोत्तेजक है।''[5]

छायावाद की भावभूमि पर लिखते हुए निराला भारतेन्दु युगीन एवं द्विवेदी युगीन नवजागरण को आगे बढ़ाते हैं। वह द्विज और शूद्र जैसी विभाजनकारी और शोषणग्रस्त व्यवस्था का जबर्दस्त विरोध करते हैं। ''निराला के चिन्तन की विशेषता यह थी कि उनके लिए सामाजिक क्रान्ति शुरू होती थी निम्न जातियों से और राजनीतिक आन्दोलन की सफलता के लिए वे इस सामाजिक क्रान्ति को अनिवार्य मानते थे। निराला के लिए अछूतोद्धार कोई 'रचनात्मक कार्यक्रम' न था जो राजनीति के आन्दोलन से छुट्टी मिलने पर फुर्सत के वक्त अपना लिया जाता। निराला के लिए जातिप्रथा का विनाश और समानता के आधार पर समाज का पुनर्गठन एक राजनीतिक कर्त्तव्य था। उसे पूरा किये बिना राष्ट्रीयता का विकास असम्भव था।''[6]निराला ने जिस तरह कविता में छंद–मुक्ति का आन्दोलन खड़ा किया उसी प्रकार कथा साहित्य में भी गरीब निम्न वर्ग के पात्रों को नायकत्व प्रदान किया। निराला का साहित्य अभिजात्यता से मुक्ति का प्रयास है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में चतुरी चमार, कुल्लीभाट और बिल्लेसुर बकरिहा जैसे चरित नायक गढ़े हैं, जो विषम परिस्थितियों में भी हार नहीं स्वीकार करते और अपने जीवन की लड़ाई लड़ते हैं।

'राजनीति के लिए सामाजिक योग्यता' विषय पर 'सुधा' पत्रिका में अगस्त सन् 1933 में उन्होंने जो सम्पादकीय टिप्पणी लिखी थी उसे डॉ0 शंभुनाथ ने अपने सामाजिक क्रान्ति के दस्तावेज भाग–1 में संकलित किया है। वर्णाश्रम धर्म पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने लिखा था कि ''जो ब्राह्मण और क्षत्रिय अपनी वर्णोच्चता का ढोंग भी नहीं छोड़ सकते, अपने ही घर के अन्त्यजों को अधिकार नहीं दे सकते, भारतीयता के अँधेरे में प्रकाश देखने के आदी हैं, वे बिना दिए हुए कुछ पाने का विचार कैसे रखते हैं? उनकी सामाजिक नीचता 'समाज' शब्द को उन्नतिशीलता के अर्थ को कैसे पुष्ट कर सकती है? हमारी राजनीतिक दुर्बलता यहीं पर है।''[7]निराला विभाजित समाज को एकता के सूत्र में पिरोना चाहते हैं इसीलिए वह लोगों को जातिगत भेदभाव से मुक्त होने का आह्वान करते हैं और कहते हैं ''इसलिए तोड़कर फेंक दीजिए जनेऊ, जिसकी आज कोई उपयोगिता नही, जो बड़प्पन का भ्रम पैदा करता है, और समस्वर से कहिए कि आप उतनी ही मर्यादा रखते हैं, जितनी आपका नीच–से–नीच पड़ोसी, चमार या भंगी रखता है। तभी आप महामनुष्य हैं। उसी क्षण आप ज्ञान कांड के अधिकारी हैं। एक समाज आपको च्युत करेगा, तो आपको दूसरा समाज मिलेगा।''[8] निराला अपनी इसी नव्य दृष्टि और नए समाज की संकल्पना के साथ नवजागरण से सीधे जुड़ते हैं। वह अंगेजों की कुटिलतापूर्ण नीतियों की आलोचना करते हैं और राष्ट्रीय स्वाधीनता के प्रश्न पर मुखर होकर लिखते हैं। 'जागो फिर एक बार' और 'राम की शक्तिपूजा' जैसी कविताएं उनके राष्ट्रीयता बोध को प्रकट करती हैं।

सन् 1920 के दौर में जब महात्मा गाँधी राष्ट्रमुक्ति की अवधारणा के सबसे सशक्त नायक बनकर उभरे और उन्होंने राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में जिस तरह लोगों को जोड़ा उसकी अभिव्यक्ति हमें मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में दिखायी देती है। ''कांग्रेसी स्वाधीनता आन्दोलन और निराला की राजनीतिक चेतना में यह अन्तर भी है कि निराला के लिए स्वाधीनता आन्दोलन विभिन्न रूप से सामाजिक क्रान्ति से जुड़ा हुआ है। देश के नाम पर वह देश की जनता को नहीं भूलते, देश को स्वाधीन होना है इसी जनता के सुखी समृद्ध जीवन के लिए। इसी कारण स्वाधीनता आन्दोलन और सामाजिक क्रान्ति परस्पर संबद्ध हैं।''[9]निराला स्वच्छंद प्रकृति के व्यक्ति थे और मुक्त जीवन के अभिलाशी थे, इसीलिए उनके उपन्यासों में स्वछंद प्रकृति के पात्रों के दर्शन होते हैं। इसकी बड़ी विशेषता यह भी है कि निराला का शुरूआती उपन्यास लेखन छायावाद की भावभूमि पर हुआ है। 'अप्सरा', 'अलका', 'निरूपमा' और 'प्रभावती' निराला के रोमंटिक उपन्यास हैं। 'प्रभावती' निराला का ऐतिहासिक रोमांस लिए हुए उपन्यास है। 'कुल्लीभाट' और 'बिल्लेसुर बकरिहा' निराला के यथार्थपरक संस्मरणात्मक उपन्यास हैं। ये दोनों कृतियाँ हिन्दी गद्य साहित्य को निराला की सर्वश्रेष्ठ देन हैं। नवजागरण जिन सामाजिक धार्मिक समस्याओं को लेकर खड़ा हुआ था, उसमें स्त्री स्वाधीनता, विधवा–विवाह, वेश्या– समस्या जैसे प्रश्न प्रमुख थे। एक वेश्या को भी विवाहित होकर अपना दाम्पत्य जीवन शुरू करने का अधिकार है, निराला ने इसे 'अप्सरा' उपन्यास का विषय वस्तु बनाया है। निराला सामाजिक क्रान्ति के पक्षधर हैं, इसीलिए वो वेश्या पुत्री 'कनक' का विवाह कुलीन राजकुमार से करवाते हैं। इस उपन्यास में वेश्या समस्या के साथ–साथ देशी राजे–रजवाड़ों के घृणित वासनामय जीवन का भी चित्रण है। निराला जातिप्रथा के विरोधी है, वह जनेऊ को तोड़कर फेंक देने की बात करते हैं, जो जातिगत उच्चता का दम्भ पैदा करती है। 'कनक' जब 'तारा' से पूछती है कि ''दीदी, क्या किसी जात का आदमी तरक्की करके दूसरे जात में नहीं जा सकता?'' इसका उत्तर हमें निराला की 'सुधा' पत्रिका की सम्पादकीय टिप्पणियों में मिलेगा जहाँ वह जाति को ही खत्म कर महामनुष्य बनकर जीने की प्रेरणा देते हैं। इस उपन्यास में चन्दन के क्रान्तिकारी व्यक्तित्व द्वारा राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में युवाओं द्वारा देशप्रेम हित सर्वस्त

न्यौछावर करने की भावना की भी झलक दिखती है।

तत्कालीन समाज में सरकार और जमींदारों के साठ–गाँठ से शोषण का जो नया तंत्र विकसित हुआ उसमें गरीब किसान पिस रहे थे। 'अलका' उपन्यास में निराला ने इस शोषण व्यवस्था का बड़ा यथार्थ वर्णन किया है। फसल अच्छी न होने के कारण अधिकतर किसान महाजनों के कर्जदार थे एवं लगान न दे पाने की स्थिति में जमींदार उन्हें मारते–पीटते थे। 'निरूपमा' उपन्यास में भी किसानों की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। इसका वर्णन करते हुए निराला लिखते हैं ''किसी तरह लाज बचाये हैं, आसाढ़ का महीना है, अनाज नहीं रहा, छः छः रूपये वाले खेत के तीन साल में अट्ठारह रूपये पड़ने लगे। डेढ़ी का अनाज तुम ही से लें, नजर नियाद ऊपर से कहाँ तक दें? खेत न जोते तो नहीं बनता, पापी पेट!''[10]इसीलिए निराला किसानों को संगठित करने की बात करते हैं। उनके क्रान्तिकारी चरित्रों का कार्यक्षेत्र गांव होता है, जो किसानों के बीच जाकर उनका संगठन करते हैं एवं उन्हें शिक्षित करने का प्रयास करते हैं।

निराला जैसी सामाजिक क्रान्ति की बात करते हैं, वैसी क्रान्तिकारिता के लिए आत्मबल चाहिए। 'निरूपमा' उपन्यास का नायक 'कृष्ण कुमार' नौकरी प्राप्त न कर पाने की दशा में बूट पालिश करता है। वह पेशेवर चमारों से कम दाम में यह कार्य करता है। सूट बूट में जूता पालिश करने पर लोग उसकी तरफ आकर्शित भी होते हैं। और छींटाकशी भी करते हैं। सस्ता साहित्य समुद्र के प्रकाशक लाला श्याम नरायण लाल देखकर कह गए, ''हम चार रूपये फार्म दे रहे थे मोपासो के अनुवाद के, वह आपको मंजूर नहीं हुआ, आखिर पालिश और ब्रश लेकर बैठे।'' पं0 रामखेलावन सिंह मुँह बिगाड़कर बोले, '' सात रूपये घण्टे की पढ़ाई लगवा रहे थे, नही भायी अब चमार बनकर पुरखों को तारो। फिर–फिरकर नहीं देखा, कितने स्वगत कह गए।''[11]

बीसवीं शताब्दी में वर्णाश्रम धर्म की जितनी तीखी आलोचना और विरोध निराला ने किया वैसा कर पाना साहित्यकारों के लिए आज भी आसान कार्य नहीं है। यह निराला के क्रान्तिकारी व्यक्तित्व की पहचान है। 'चतुरी चमार' कहानी में एक जगह निराला कहते हैं, ''चमार दबेंगे ब्राह्मण दबायेंगे। दवा है दोनों की जड़ें मार दी जायें, पर यह सहज साध्य नहीं।''[12]भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जाति भेद, मनुष्य–मनुष्य में भेद एवं दलितों की दयनीय स्थिति देखकर निराला ने 'कुल्लीभाट' उपन्यास में लिखा था, ''इसकी ओर कभी किसी ने नहीं देखा। ये पुश्त–दर–पुश्त से सम्मान देकर नत–मस्तक ही संसार से चले गए हैं। संसार की सभ्यता में इनका स्थान नहीं। ये नहीं कह सकते, हमारे पूर्वज कश्यप, भारद्वाज, कपिल, कणाद थे; रामायण, महाभारत इनकी कृतियाँ हैं; अर्थशास्त्र, कामसूत्र इन्होंने लिखे हैं, अशोक, विक्रमादित्य, हर्षवर्धन, पृथ्वीराज इनके वंश के हैं। फिर भी ये थे और हैं।''[13]

निराला समाज में फैली कुरीतियों का यथार्थ चित्रण करते हैं साथ ही दबी, कुचली, शोषित एवं पीड़ित जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह देशोन्नति में स्त्री–पुरूष समानाधिकार, शिक्षा एवं रोजगार की बात करते हैं। यही नवजागरण का भी मूल स्वर था जिसमें सामाजिक, धार्मिक सुधारों के साथ शिक्षा एवं स्वाधीनता पर बल दिया गया। निराला का कथा साहित्य प्रतिरोध का साहित्य है। 1930–32 के किसान आन्दोलन के बाद से किसान भी अपने अधिकारों को लेकर सचेत होने लगे थे। नवजागरण की चेतना के विकास के साथ राष्ट्रीय स्वाधीनता के प्रयासों में भी तीव्रता आई जिसकी अभिव्यक्ति निराला साहित्य में प्रमुखता से हुई है। सच्चे अर्थों में निराला महावीर प्रसाद द्विवेदी के बाद हिन्दी नवजागरण को बड़ी शिद्दत से आगे बढ़ाते हैं।

सन्दर्भ :–

1. सामाजिक क्रान्ति के दस्तावेज–1 (सं0) शंभुनाथ पृष्ठ संख्या 19, वाणी प्रकाशन दिल्ली द्वितीय संस्करण, 2006
2. सामाजिक क्रान्ति के दस्तावेज–1 (सं0) शंभुनाथ पृष्ठ संख्या 29–30, वाणी प्रकाशन दिल्ली द्वितीय संस्करण, 2006
3. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, डॉ0 रामविलास शर्मा, पृष्ठ संख्या 12, प्रथम छात्र संस्करण, 2012 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. वही, पृष्ठ संख्या 15
5. निराला का कथा साहित्य, डॉ0 कुसुम वार्श्णेय, पृष्ठ संख्या 18
6. निराला की साहित्य साधना–2, डॉ0 रामविलास शर्मा, पृष्ठ संख्या 29, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2011
7. सामाजिक क्रान्ति के दस्तावेज–1 (सं0) शंभुनाथ पृष्ठ संख्या 670, वाणी प्रकाशन दिल्ली द्वितीय संस्करण, 2006
8. वही
9. निराला की साहित्य साधना–2, डॉ0 रामविलास शर्मा, पृष्ठ संख्या 153, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2011
10. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, निरूपमा, राजकमल पेपरबैक्स 2012, पृष्ठ संख्या 58
11. वही पृष्ठ संख्या 23–24
12. निराला रचना वाली–4 (सं) नन्दकिशोर नवल, पृष्ठ संख्या 366, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पंचम संस्करण, 2005
13. (वही, पृष्ठ संख्या 63)